माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में शैक्षिक तनाव, आक्रामक व्यवहार एवं सामाजिक संवेदनशीलता पर क्रिया आधारित शांति शिक्षा कार्यक्रम के प्रभाव का अध्ययन

पीएच0डी0 उपाधि

की आंशिक पूर्ति हेतु प्रस्तुत

शोध प्रबन्ध की रूपरेखा

[2018]

शोधार्थी

संजय कुमार

शोध निर्देशिका

प्रो0 लाजवन्ती

सह शोध निर्देशिका

प्रो0 रंजीत कौर सत्संगी

(एमेरेट्स)

प्रो0 अर्चना कपूर

विभागाध्यक्ष एवं संकाय प्रमुख

शिक्षा संकाय

दयालबाग एजूकेशनल इंस्टीट्यूट, (डीम्ड यूनिवर्सिटी)

दयालबाग, आगरा

1.0.0 प्रस्तावना

अति प्राचीन काल से ही भारत समाज के पूर्ण विकास के लिए शिक्षा के महत्व के प्रति जागरूक रहा है। सम्पूर्ण विश्व में भारत का अपनी गौरवशाली संस्कृति और इतिहास के कारण अद्वितीय स्थान है। शिक्षाविदों के अनुसार शिक्षा ऐसी होनी चाहिए जो स्कूल छोड़ने के बाद भी काम आए, इसलिए मनुष्य की गुणात्मक शिक्षा प्राप्त करने की इच्छा पूरी होने के लिए यह अत्यन्त आवश्यक है कि उसका वातावरण एवं समाज शान्तिपूर्ण हो, लेकिन आजकल के दौर में शांतिपूर्ण वातावरण की बात करना कल्पना मात्र ही होगा। आज प्रत्येक नागरिक दूसरे पर अधिकार करना चाहता है, जिसके कारण वह दूसरों को परेशान करता है, हिंसा करता है एवं कभी–कभी तो वह उन्हें मृत्यु लोक में भी पहुँचा देता है। हिंसा का विकराल रूप आतंकवाद में परिलक्षित होता है। आज जहाँ भी देखो वहाँ तबाही का मंजर नजर आता है, इस विध्वंसक दौर से हमें सिर्फ शिक्षा ही बाहर निकाल सकती है और शिक्षा में भी शांति शिक्षा। शांतिपूर्ण वातावरण में ही व्यक्ति का सर्वांगीण विकास सम्भव है।

जैन (2017) के अनुसार शांति एक छोटा सा शब्द है जिसकी व्याख्या अम्बर के समान वृहदाकार, सागर के समान अमाप्य है। शांति व्यक्ति का सहज स्वभाव है। शान्ति केवल युद्ध का अभाव नहीं बल्कि समरसता एवं रचनात्मक वातावरण का निर्माण है। वस्तुतः शांति व्यक्तिगत, सामाजिक एवं वैश्विक शांति की वह समग्रता है जिसमें हिंसा, युद्ध, शोषण का अभाव तथा करूणा, मैत्री एवं प्रेम रूपी गुणों का नैसर्गिक विकास हो। शान्ति के शाब्दिक अर्थ के रूप में 'शान्ति' शब्द संस्कृत के ''शम्'' धातु से बना है। जिसका अर्थ है – 'शमन करना' अर्थात् बुरा प्रभाव हटाना और सुख कल्याण की प्राप्ति करना। वेदों, उपनिषदों एवं जैनागमों में शान्ति शब्द विभिन्न स्थलों पर विभिन्न प्रसंगों के रूप में सकारात्मक अर्थों के रूप में उपयोग किया जाता रहा है।

स्कोट (2008) के शब्दों में शैक्षिक तनाव शैक्षिक आवश्यकताओं से सम्बन्धित माँगें हैं जो विद्यार्थी व्यक्तिगत रूप से प्राप्त करना चाहता है अगर कोई छात्र शैक्षिक तनाव को नियंत्रित करने में असमर्थ होता है तब इसका परिणाम गम्भीर मानसिक सामाजिक तथा संवेगात्मक रूप में हो सकता है। **टेरेल (1992)** के अनुसार परीक्षा ही नहीं बल्कि अन्य बहुत से कारक शैक्षिक तनाव को बढ़ावा देते हैं जैसे–गृहकार्य समय

पर पूरा ना कर पाना, व्यक्तिगत तथा सामूहिक प्रोजेक्ट पर कार्य करना, असाइनमेंट लिखना, समय का दबाव, आर्थिक सहयोग का अभाव, शैक्षिक योग्यता को लेकर चिंतित होना, कक्षाओं की समय सारणी और अध्ययन से सम्बन्धित आवश्यक अभिप्रेरणा का अभाव ।

विद्यालयों में छात्रों द्वारा आक्रामक व्यवहार करना आज सामान्य बात है। आक्रामकता को सामान्य रूप से परिभाषित करते हुए कहा जा सकता हे कि यह एक ऐसा कृत्य है जिसका उद्देश्य दूसरों को चोट या नुकसान पहुंचाना होता है। **बर्कोविट्ज (1993)** ने आक्रामकता को परिभाषित करते हुए कहा कि आक्रामकता एक ऐसा व्यवहार है जिसका सीधा उद्देश्य दूसरे जीव को नुकसान पहुंचाना या घायल(चोटिल) करने से होता है जहां दूसरा व्यक्ति नुकसान से बचने को लेकर अभिप्रेरित होगा। **ब्जोकेविट्स और अन्य (1992)** के अनुसार सामान्यतः तीन प्रकार के माध्यमों के द्वारा आक्रामक व्यवहार प्रदर्शित होता है– प्रत्यक्ष, अप्रत्यक्ष और शाब्दिक। प्रत्यक्ष आक्रामकता के अन्तर्गत शारीरिक रूप से किया जाने वाला व्यवहार आता है–मारना, लात मारना, पंचिंग, काटना इत्यादि। अप्रत्यक्ष आक्रामक व्यवहार के अन्तर्गत बहिष्करण, सामाजिक विलगन(अलगाव), अफवाहें फैलाना, दूसरों के राज खोलना इत्यादि आते हैं। शाब्दिक आक्रामकता के अन्तर्गत छात्रों द्वारा अपशब्दों का प्रयोग करना, गाली देना, दूसरों को धमकी देना, दुर्व्यवहार करना इत्यादि आते हैं।

सामाजिक संवेदनशीलता किसी व्यक्ति की उस कुशलता का वर्णन है जिससे वह व्यक्ति सामाजिक वार्तालाप एवं अन्य लोगों के लिए सामाजिक सम्मान प्रदान करने हेतु विभिन्न संकेत एवं संदर्भों की पहचान ग्रहण करने एवं समझने की प्रक्रिया में सक्षम हो।

किसी भी देश की प्रगति या विकास वहाँ के छात्रों की शिक्षा पर निर्भर करता है लेकिन आजकल के छात्रों में शैक्षिक तनाव के कारण उनमें आक्रामक व्यवहार की प्रवृत्ति बढ़ती ही जा रही है, हम हर दिन अखबारों या दूरदर्शन के माध्यम से यह देखते हैं कि छात्रों के द्वारा किया जाने वाला आक्रामक व्यवहार उनके और उनके अभिवावकों के लिए बहुत ही कष्टप्रिय होता है। छात्र आपस में झगड़ते हैं, सड़कों पर कोहराम मचाते हैं और कभी–कभी तो किसी की हत्या तक कर देते हैं। ऐसे में हमें इस गम्भीर समस्या की ओर ध्यान देने की अति आवश्यकता है। आक्रामक व्यवहार के कारण ही छात्र समाज से दूर रहने

लगते हैं और उनमें सामाजिक संवेदनशीलता का पतन देखने को मिलता है। आज के छात्र सोशल मीडिया पर तो लाखों दोस्त खोजते हैं लेकिन उनके आस–पड़ोस में जो लोग रहते हैं उनके बारे में एक पल भी नहीं सोचते। उन्हे डिजिटल दुनियाँ हकीकत की दुनियाँ से ज्यादा लुभावनी लगती है और यही कारण है कि उनमें सामाजिक संवेदनशीलता की कमी पायी जाती है।

उपर्युक्त समस्याओं का निवारण हम शांति शिक्षा के द्वारा कर सकते हैं क्योंकि जब छात्रों में शांति की समझ विकसित होगी तो उनका तनाव भी कम होने लगेगा और अगर उनमें तनाव कम होने लगेगा तो उनका आक्रामक व्यवहार भी कम हो जायेगा क्योंकि आक्रामक व्यवहार का एक बड़ा कारण तनाव भी है। जब छात्रों का आक्रामक व्यवहार कम होगा तो उनमें सामाजिक संवेदनशीलता का गुण भी स्वतः ही विकसित होने लगेगा।

अतः आज के विद्यार्थियों को शान्ति शिक्षा देने की अति आवश्यकता है जिससे वे अपना आज और कल दोनों ही खुशहाल बना सकें। यह शोध इसी ओर एक सकारात्मक कदम होगा।

1.2.0 समस्या का प्रादुर्भाव एवं अध्ययन की न्यायोचितता

वर्तमान समय प्रतिस्पर्धा और भौतिकवादिता का समय है। प्रत्येक देश, समाज तथा वहाँ के नागरिक एक दूसरे से आगे बढ़ने की होड़ में लगे रहते हैं, इसी होड़ में ये लोग एक–दूसरे के साथ हिंसात्मक रवैया अपनाने या दूसरे को अपने बल से डराने की कोशिशें भी करते हैं, साथ ही कुछ लोगों को उनके जीवन के लिऐ अनिवार्य चीजों से भी वंचित होना पड़ता है। आज के युग को देखें तो कहीं नक्सलवादी हमला, कहीं अलगाव की माँग तो कहीं आतंकी घटनाएँ। यह घटनाएँ सिर्फ वयस्कों तक ही सीमित नहीं हैं आजकल विद्यार्थियों में भी इस प्रकार की घटनाऐं बढ़ती ही जा रही हैं। विद्यार्थियों के मध्य तनाव, आक्रामक व्यवहार एवं उनका सामाजिक रूप से असंवेदनशील होना भविष्य के लिए और आज के लिए एक विकराल समस्या उत्पन्न कर देगा। हम सिर्फ हाथ पर हाथ रखकर ये सब नहीं देख सकते कि कोई छात्र कब शांति भंग कर दे। हमें मिलकर इस ओर विचार करने की आवश्यकता है।

जैन, इन्द्रा (2017) ने शांति शिक्षा से सम्बन्धित "जैन दर्शन में निहित शांति शिक्षा के तत्व एवं विद्यालय पाठ्यक्रम में उनकी प्रासंगिकता" नामक शीर्षक पर अपना शोध किया और पाया कि जैन दर्शन में निहित शांति के तत्वों जैसे– सत्य, अहिंसा, अपरिग्रह आदि का वर्तमान शिक्षा प्रणाली पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है। **पिन्टो स्टेनी, पावोस्टिन (2013)** ने "अ स्टडी ऑन द इफेक्ट ऑफ स्पेसली डिजाइन्ड इंस्ट्रक्शनल मटेरिअल इन डेवलोपिंग पीस अवेअरनेस अमॉन्ग द प्यूपलस ऑफ स्टेन्डर्ड VII इन उत्तर कन्नड डिस्ट्रिक" नामक शीर्षक पर अध्ययन किया ओर पाया कि स्पेसली डिजाइन्ड इंस्ट्रक्शनल मटेरिअल का प्रयोग करने के बाद छात्रों की शांति के संदर्भ में जागरूकता, मानव अधिकार, सहिष्णुता, सहयोग और सम्प्रेषण में पूर्व परीक्षण के स्थान पर बृध्दि प्राप्त हुई।

उपरोक्त के साथ–साथ **कुमार, राज (2011)** ने, **मथाई, सुराम्या (2014)** ने, **नाथन, येशुदास (1997) ने, पटेल, मुकुन्द (2011)** ने क्रमशः हिंसा कम करने में शांति शिक्षा का अध्ययन, योग का प्रभाव शांति शिक्षा पर, तीसरी दुनियाँ के सन्दर्भ में शांति शिक्षा की भूमिका तथा शांति शिक्षा में पुस्तकालयों की भूमिका नामक विभिन्न चरों के साथ अपने शोध अध्ययन पूर्ण किये और पाया कि शांति शिक्षा का विभिन्न चरों के साथ तथा विभिन्न चरों का शांति शिक्षा के साथ सकारात्मक सम्बन्ध पाया जाता है।

शर्मा, अन्जली (2006) ने "इफेक्ट ऑफ योगिक प्रेक्टिसेस ऑन सोशल स्ट्रेस, अकेडमिक स्ट्रेस, सेल्फ–एस्टीम एण्ड इमोशनल मेच्युरिटी ऑफ सीनियर सेकण्ड्री स्कूल स्टूडेन्टस" नामक शीर्षक से अपना शोध किया और पाया कि योगिक क्रियाओं का शैक्षिक तनाव, शैक्षिक कुण्ठा, शैक्षिक द्वन्द, शैक्षिक दबाव तथा शैक्षिक चिन्ता पर सार्थक सकारात्मक प्रभाव पड़ता है। **मनोहरलाल (2013)** ने "माध्यमिक स्तर के आवासीय एवं गैर–आवासीय विद्यार्थियों के शैक्षिक तनाव तथा व्यक्तित्व प्रतिमानों का तुलनात्मक अध्ययन" नामक शीर्षक से अध्ययन किया और पाया कि शैक्षिक तनाव व व्यक्तित्व प्रतिमानों में अन्तर देखने को मिलता है। गैर–आवासीय लड़कियों/लड़कों की तुलना में आवासीय लड़कियां/लड़के शैक्षिक तनाव का अधिक सामना करते हैं। **तोमर, जया (2011)** ने "अधिगम में समर्थ एवं असमर्थ बालकों का सामाजिक एवं शैक्षिक तनाव का अध्ययन" नामक शीर्षक से अपना शोध किया और पाया कि अधिगम में असमर्थ छात्र लिखने, पढ़ने, बोलने, गणितीय क्षमताओं एवं तार्किकता सम्बन्धी असमर्थता के कारण अपने शैक्षिक

वातावरण में भली भांति समायोजित नहीं हो पाते हैं। इन अध्ययनों में हम पाते हैं कि शैक्षिक तनाव पर विभिन्न चरों यथा योग अभ्यास, व्यक्तित्व प्रतिमानों आदि के साथ अध्ययन किया और पाया कि शैक्षिक तनाव विद्यार्थियों के व्यक्तित्व प्रतिमानों, समायोजन करने आदि पर सकारात्मक प्रभाव डालता है।

साडी, हॉनरमण्ड, नजारियन, अहादि और अस्कारी (2012) ने "माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में आक्रामकता कम करने हेतु भावनात्मक बुध्दिमता प्रशिक्षण के प्रभाव का मूल्यांकन" नामक शीर्षक से अपना शोध किया और पाया कि भावनात्मक बुध्दिमता प्रशिक्षण के प्रभाव से छात्रों की आक्रामकता कम करने तथा सामाजिक अुकूलता बढ़ाने में मदद मिलेगी। **चेन, हुआंग, वांग और चांग (2012)** ने "बच्चों में आक्रामकता, सहकर्मी सम्बन्ध तथा अवसाद के बीच सम्बन्धों का अध्ययन" नामक शीर्षक से अपना शोध किया और पाया कि प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष आक्रामकता दोनों ही बच्चों के किशोरावस्था में पहुंचने पर सहकर्मी सम्बन्धों में कमी करती हैं तथा अवसाद को बढ़ावा देती है। **जोशी, चन्द्रवती और रिजवान मुहम्मद (2015)** ने "किशोरों के आक्रामक व्यवहार का शैक्षिक निष्पत्ति पर प्रभाव का अध्ययन" नामक शीर्षक से अपना शोध किया और पाया कि छात्राओं का आक्रामकता स्तर छात्रों की तुलना में अधिक पाया गया, निम्न शैक्षिक निष्पत्ति वाली छात्राओं में निम्न आक्रामकता स्तर तथा उच्च शैक्षिक निष्पत्ति वाली छात्राओं में में उच्च आक्रामकता स्तर पाया गया। **जोहल और कौर (2015)** ने " किशोरों के आक्रामक व्यवहार तथा माता–पिता के व्यवहार के बीच सम्बन्धो का अध्ययन" नामक शीर्षक से अपना शोध किया और पाया कि माता–पिता के दुर्व्यवहार तथा किशोरों के आक्रामक व्यवहार के बीच सकारात्मक सार्थक सम्बन्ध होता है, साथ ही यह भी पाया कि माता–पिता का व्यवहार छात्रों की तुलना में छात्राओं के प्रति कुछ मामलों में अधिक दुर्भावपूर्ण होता है। इन शोध अध्ययनों के आधार पर हम यह कह सकते हैं कि विद्यार्थियों के आक्रामक व्यवहार के पीछे कई कारण पाये जाते है जैसे, परिवार व सहकर्मियों की भूमिका, शैक्षिक निष्पत्ति आदि।

क्लासेहिंसकी लुकास, कोनार्ड स्चनेबेल और मिशैला स्चरोडर आबे (2017) ने "बेनिफिट्स ऑफ पावर पॉज़िंगः इफेक्ट्स ऑन डोमिनेन्स एण्ड सोशल सेन्सिटिविटी" नामक शीर्षक से अपना शोध किया और निष्कर्ष स्वरूप कहा कि पावर पॉज़िंग का सामाजिक संवेदनशीलता तथा प्रभुत्व के व्यवहार संकेतकों पर कोई महत्वपूर्ण मुख्य सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है। **ऑकल एडम, ऐसेन आल्टिनॉक (2016)** ने "डवलॉपिंग

सोशल सेन्सिटिविटी विद सर्विस लर्निंग" नामक शीर्षक से अपना शोध किया और पाया कि सोशल सर्विस एक्टिविटी का छात्रों के चरित्र निर्माण एवं सामाजिक विकास पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है। इस अध्ययन से हमें ज्ञात होता है कि सामाजिक सेवा के द्वारा सामाजिक संवेदनशीलता में बढ़ोत्तरी पायी जाती है। **बेन्डेर लिजा, गुरसिमरन वालिआ, कृष्णा काम्भाम्पती, केन्डल ई. नेगार्ड, ट्राविस ई. नेगार्ड (2012)** ने "सोशल सेन्सिटिविटी एण्ड क्लासरूम टीम प्रोजेक्ट्सः एन इम्पेरिकल इन्वेस्टिगेशन" नामक शीर्षक से अपना शोध किया और समस्त परिणामों के आधार पर पाया कि समूह में पायी जाने वाली सामाजिक संवेदनशीलता का सफलतम प्रदर्शन करने वाले समूह के साथ उच्च सह सम्बन्ध पाया जाता है। **फ्राई पी. एस. (2010)** ने "चिल्ड्रेन्स सोशल सेन्सिटिविटी, ऐल्ट्रूइज़्म् एण्ड सेल्फ–ग्रेटिफिकेशन" नामक शीर्षक से अपना शोध किया और पाया कि सामाजिक संवेदनशीलता और परोपकारिता के मध्य सकारात्मक सहसम्बन्ध होता है जबकि सामाजिक संवेदनशीलता तथा आत्म–संतुष्टि के मध्य नकारात्मक सहसम्बन्ध पाया जाता है।

साहित्य के गहन सर्वेक्षण के आधार पर कहा जा सकता है कि अभी तक शांति शिक्षा, शैक्षिक तनाव, आक्रामक व्यवहार एवं सामाजिक संवेदनशीलता पर स्वतंत्र रूप में अध्ययन किया जाता रहा है लेकिन इन सभी का एक साथ अध्ययन नहीं किया गया है।

अतः उपरोक्त विवेचन के फलस्वरूप शोधार्थी के मस्तिष्क में कुछ स्वाभाविक जिज्ञासायें एवं प्रश्न चिन्ह उत्पन्न हुयें जो प्रस्तुत शोध समस्या के चयन का कारण बने वह जिज्ञासायें एवं प्रश्न चिन्ह निम्न हैं–

1. क्या छात्रों के शैक्षिक तनाव पर क्रिया आधारित शांति शिक्षा कार्यक्रम का प्रभाव पड़ता है?

2. क्या छात्रों के आक्रामक व्यवहार पर क्रिया आधारित शांति शिक्षा कार्यक्रम का प्रभाव पड़ता है?

3. क्या छात्रों की सामाजिक संवेदनशीलता पर क्रिया आधारित शांति शिक्षा कार्यक्रम का प्रभाव पड़ता है?

4. क्या क्रिया आधारित शांति शिक्षा कार्यक्रम के द्वारा छात्रों के शैक्षिक तनाव को कम करने में सहायता प्राप्त होगी?

5. क्या क्रिया आधारित शांति शिक्षा कार्यक्रम के द्वारा छात्रों के आक्रामक व्यवहार को कम किया जा सकता है?

6. क्या क्रिया आधारित शांति शिक्षा कार्यक्रम के द्वारा छात्रों की सामाजिक संवेदनशीलता को बढ़ाया जा सकता है?

उपरोक्त प्रश्नों के उत्तरों की उपयोगिता वर्तमान समय में अत्यधिक प्रभावी साबित होती है क्योंकि आज हम एक ऐसे युग में जीवन व्यतीत कर रहे हैं जहाँ हर दिन ऐसी घटनाएँ घटित होती हैं जो हमसे प्रश्न करती हैं कि क्या हम वास्तव में शांतिपूर्ण वातावरण में अपना जीवन जी रहे हैं? इन समस्त घटनाओं का एक प्रमुख कारण आन्तरिक शांति का अभाव माना जा सकता है, आज कोई भी व्यक्ति आन्तरिक रूप से शांत नहीं है। विद्यार्थियों में भी शांति का अभाव पाया जाता है। विद्यार्थियों का शैक्षिक तनाव उनमें आक्रामक व्यवहार को बढ़ावा देता है, आक्रामक व्यवहार के परिणामस्वरूप छात्र हिंसात्मक क्रियाएँ करता है और इसी कारण उसमें सामाजिक संवेदनशीलता का पतन देखने को मिलता है। इन सभी कारकों पर क्रिया आधारित शांति शिक्षा कार्यक्रम का प्रभाव पड़ता है कि नहीं? इस प्रयोजन हेतु शोधार्थी ने प्रस्तुत समस्या का चयन किया है।

1.3.0 समस्या कथन

''माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में शैक्षिक तनाव, आक्रामक व्यवहार एवं सामाजिक संवेदनशीलता पर क्रिया आधारित शांति शिक्षा कार्यक्रम (ABPEP–Activity Based Peace Education Programme) के प्रभाव का अध्ययन''

1.4.0 समस्या में प्रयुक्त शब्दों की व्याख्या

1.4.1 माध्यमिक स्तर – वे विघालय जिन्हें केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड एवं उत्तर प्रदेश शिक्षा परिषद् से मान्यता प्राप्त है। वर्तमान प्रणाली में माध्यमिक स्तर को दो भागों में विभाजित किया गया है:–

(क) माध्यमिक स्तर– 9, 10

(ख) उच्चतर माध्यमिक स्तर– 11, 12

कार्यात्मक परिभाषा – इस अध्ययन में माध्यमिक स्तर से हमारा तात्पर्य कक्षा 9वीं के विद्यार्थियों को शामिल करने से है।

1.4.2 शान्ति शिक्षा

आर0 डी0 लेइंग (1978) के अनुसार, शान्ति शिक्षा द्वन्द व हिंसा की समस्याओं के लिए प्रतिक्रिया है जो विश्वव्यापी स्तर व राष्ट्रीय स्तर से लेकर स्थानीय स्तर तक विस्तारित है। यह न्यायसंगत व दीर्घकालिक भविष्य की रचना से सम्बन्धित है।

कार्यात्मक परिभाषा

शांति शिक्षा, शिक्षा का वह विशिष्ट कार्यक्रम है जिसके माध्यम से विद्यार्थियों के ज्ञान, मूल्य, अभिवृत्तियों, रूचियों तथा कुशलताओं में ऐसे सकारात्मक परिवर्तन लाना है जिससे वह स्वयं तथा अपने परिवार, समाज, राष्ट्र तथा विश्व में शांति बनाये रखने में सक्षम हों।

1.4.3 शैक्षिक तनाव

मैकजार्ज, सैम्टर और गिलिहान (2005) के अनुसार, शैक्षिक तनाव को जीर्ण तनाव के रूप में देखा जा सकता है जो कि शैक्षिक माँगों की प्रकृति से उत्पन्न एवं नकारात्मक परिणामों अवसाद और शारीरिक रोग से जुड़ा होता है।

कार्यात्मक परिभाषा

शैक्षिक तनाव से हमारा आशय विभिन्न शैक्षिक परिस्थितियों से है जिनमें विद्यालय जाना, कक्षा में बैठना, गृहकार्य करना, परीक्षा की तैयारी करना तथा परीक्षा के परिणाम को लेकर तनाव करने से है।

1.4.4 आक्रामक व्यवहार

डफ (2012) के अनुसार, व्यवहार की वह सीमा जिसका परिणाम स्वयं को, दूसरों को तथा वातावरण में उपस्थित वस्तुओं को शारीरिक एवं मनोवैज्ञानिक दोनो रूप से नुकसान पहुँचा सकता है।

कार्यात्मक परिभाषा

आक्रामक व्यवहार से हमारा तात्पर्य विद्यार्थियों द्वारा किये जाने वाले विध्वंसात्मक कार्य, अभद्र व्यवहार, आपस में झगड़ना तथा हिंसात्मक क्रियाओं से है।

1.4.5 सामाजिक संवेदनशीलता

सरवोनो (2013) के अनुसार, सामाजिक संवेदनशीलता को मनुष्यों की उस क्षमता के रूप में परिभाषित किया जा सकता है जो दूसरों के विचारों और अपेक्षाओं के अनुसार व्यवहार को समायोजित करने में सक्षम हो।

कार्यात्मक परिभाषा – सामाजिक संवेदनशीलता से हमारा तात्पर्य विद्यार्थियों द्वारा सामाजिक प्राणी होने के नाते किये जाने वाले व्यवहार तथा समाज के प्रति उसके कर्तव्यों, उत्तरदायित्वों तथा समाज के संदर्भ में उसकी जागरुकता से है।

1.5.0 अध्ययन के उद्देश्य

(1) माध्यमिक स्तर पर क्रिया आधारित शांति शिक्षा कार्यक्रम का निर्माण करना।

(2) माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में शैक्षिक तनाव पर क्रिया आधारित शांति शिक्षा कार्यक्रम के प्रभाव का अध्ययन करना।

(3) माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में आक्रामक व्यवहार पर क्रिया आधारित शांति शिक्षा कार्यक्रम के प्रभाव का अध्ययन करना।

(4) माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में सामाजिक संवेदनशीलता पर क्रिया आधारित शांति शिक्षा कार्यक्रम के प्रभाव का अध्ययन करना।

1.6.0 अध्ययन की परिकल्पनाएँ

(1) माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में शैक्षिक तनाव पर क्रिया आधारित शांति शिक्षा कार्यक्रम का कोई सार्थक प्रभाव नहीं होगा।

(2) माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में आक्रामक व्यवहार पर क्रिया आधारित शांति शिक्षा कार्यक्रम का कोई सार्थक प्रभाव नहीं होगा।

(3) माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में सामाजिक संवेदनशीलता पर क्रिया आधारित शांति शिक्षा कार्यक्रम का कोई सार्थक प्रभाव नहीं होगा।

1.7.0 अध्ययन की परिसीमाएँ

समस्या का स्वरूप साधारणतः अधिक व्यापक होता है। समस्या का व्यावहारिक रूप में अध्ययन करने के लिए समस्या की परिसीमाऐं अत्यन्त आवश्यक होती हैं। समय एवं साधनों को ध्यान में रखते हुए प्रस्तुत अध्ययन की अधोलिखित परिसीमाएँ हैं–

(1) समस्या के अध्ययन हेतु आगरा शहर के एक विद्यालय के छात्रों को ही लिया जायेगा।

(2) यह अध्ययन माध्यमिक स्तर तक ही सीमित हैं।

1.8.0 अध्ययन के चर

(1)**स्वतंत्र चर**–शांति शिक्षा

(2)**परतंत्र चर**–शैक्षिक तनाव, आक्रामक व्यवहार, सामाजिक संवेदनशीलता।

1.9.0 अध्ययन विधि

प्रस्तुत शोधकार्य में प्रयोगात्मक विधि का प्रयोग किया जायेगा। इस अध्ययन में न्यादर्श को सोद्देश्य विधि से चयनित किया जायेगा। सम्पूर्ण न्यादर्श को दो समूहों (1–नियंत्रित समूह, 2–प्रयोगात्मक समूह) में रखा

गया है। दोनों समूहों पर पूर्व परीक्षण के अन्तर्गत आश्रित चरों (शैक्षिक तनाव, आक्रामक व्यवहार तथा सामाजिक संवेदनशीलता) का उपयुक्त उपकरणों द्वारा आंकलन किया जायेगा तत्पश्चात् प्रयोगात्मक समूह को क्रिया आधारित शांति शिक्षा कार्यक्रम के अन्तर्गत अध्ययन कराया जायेगा तथा अन्त में पश्च परीक्षण के अन्तर्गत एक बार पुन: आश्रित चरों (शैक्षिक तनाव, आक्रामक व्यवहार तथा सामाजिक संवेदनशीलता) का उपयुक्त उपकरणों द्वारा आंकलन किया जायेगा। इसकी रुपरेखा निम्नवत है:-

तालिका 1.0: अध्ययन का संरचनात्मक प्रारूप

क्रम संख्या	समूह	परीक्षण	उपचार	अवधि		परीक्षण
				चक्र अवधि	सम्पूर्ण अवधि	
1	प्रयोगात्मक समूह	पूर्व परीक्षण	क्रिया आधारित शांति शिक्षा कार्यक्रम द्वारा अध्ययन	40 मिनट	90 दिवस	पश्च परीक्षण
2	नियंत्रित समूह	पूर्व परीक्षण	किसी भी प्रकार का उपचार नहीं दिया जायेगा			पश्च परीक्षण

1.10.0 जनसंख्या

अध्ययन की जनसंख्या उत्तर प्रदेश के माध्यमिक स्तर के विद्यार्थी हैं जो किसी ना किसी मान्यता प्राप्त बोर्ड से सम्बंधित हैं।

1.11.0 न्यादर्श

अध्ययन हेतु आगरा जिले के माध्यमिक विद्यालयों की सूची जिला विद्यालय निरीक्षक के कार्यालय से प्राप्त करेंगे तत्पश्चात् उनमें से छात्रों के विद्यालयों का चयन करके उनकी सूची बनायी जायेगी। उसके पश्चात् एक ऐसे विद्यालय को सोद्देश्य विधि से चुना जायेगा जिसमें 9वीं कक्षा के दो वर्ग हों तथा प्रत्येक वर्ग में कम से कम 50–50 छात्र हों। इस प्रकार सोद्देश्य न्यादर्श चयन विधि के द्वारा एक माध्यमिक विद्यालय का चयन किया जायेगा जिसमें एक प्रायोगिक समूह एवं एक नियंत्रित समूह बनाया जायेगा।

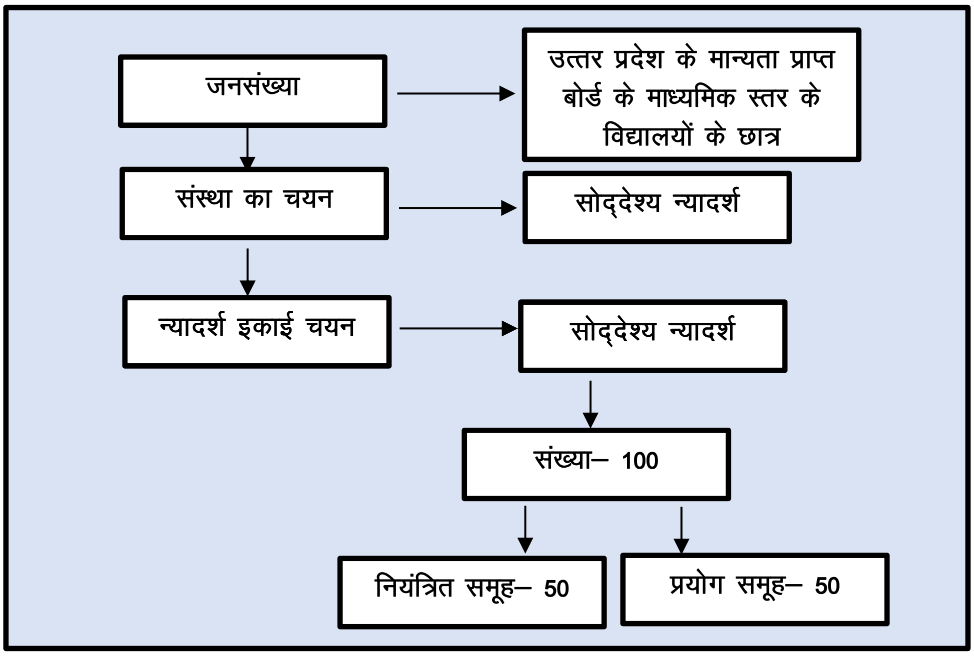

चित्र 1.0: न्यादर्श चयन प्रक्रिया

1.12.0 प्रयोगात्मक विधि की रूपरेखा

1.12.1 विकासात्मक चरण– क्रिया आधारित शांति शिक्षा कार्यक्रम के अन्तर्गत समस्त पाठयोजनाओं को शोधार्थी द्वारा इस प्रकार निर्मित किया जायेगा कि विद्यार्थियों में प्रेम, सद्भाव, सहिष्णुता, विश्वास, न्याय, सहयोग की भावना का विकास हो। क्रिया आधारित शांति शिक्षा कार्यक्रम को विशेषज्ञ की देखरेख में तथा उचित मार्गदर्शन में पूर्ण किया जायेगा। निर्मित पाठों को विभिन्न प्रकार की क्रियात्मक गतिविधियों के द्वारा प्रस्तुत किया जायेगा, जैसे– वैज्ञानिक प्रायोगिक विधियाँ, अभिनय, नाटक, खेल, चलचित्र प्रदर्शन, स्लाइड शो, ध्वनि प्रदर्शन इत्यादि।

क्रिया आधारित शांति शिक्षा कार्यक्रम का निर्माण अध्ययनकर्ता द्वारा निम्न प्रकार से किया जाएगा:

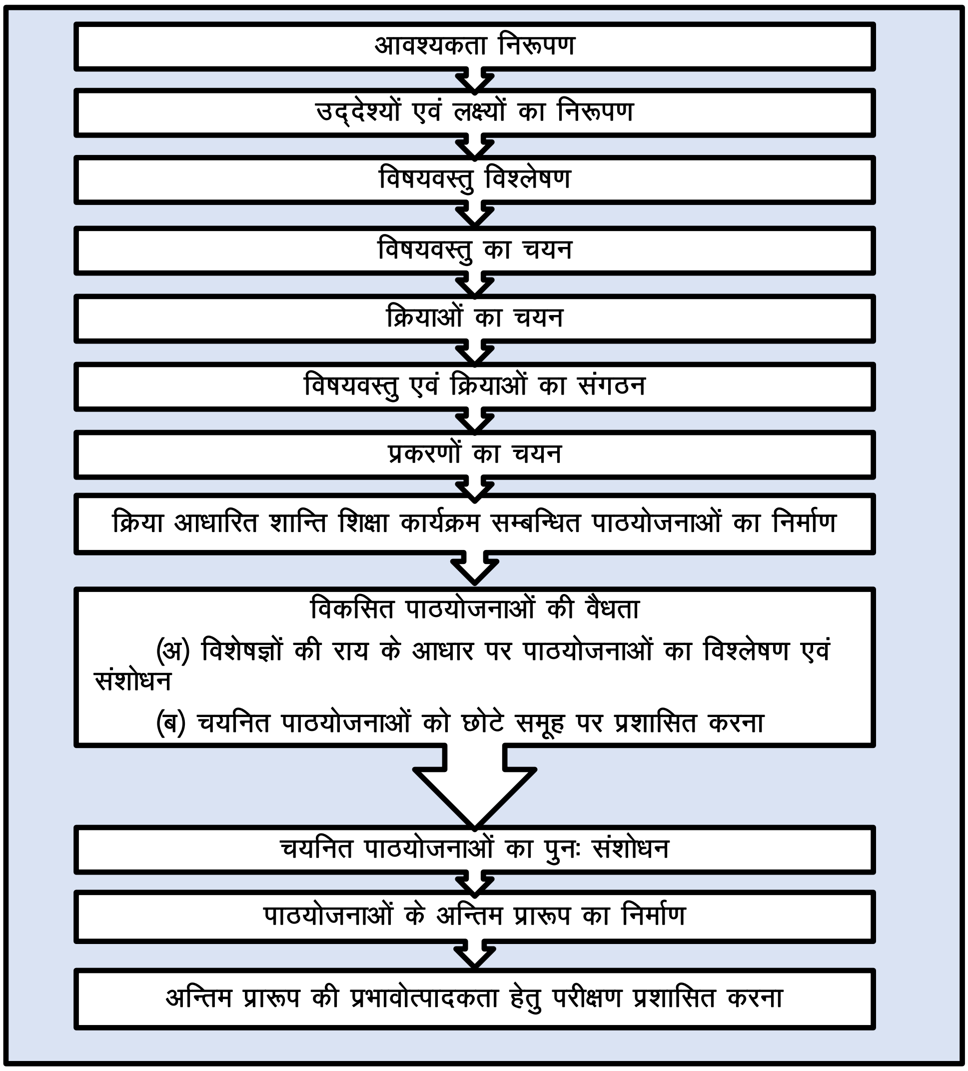

चित्र 2.0: क्रिया आधारित शान्ति शिक्षा कार्यक्रम के विकास पद

1.12.2 प्रयोगात्मक चरण– क्रिया आधारित शांति शिक्षा कार्यक्रम को शुरु करने से पहले हम दोनों समूहों पर पूर्व परीक्षण के अन्तर्गत आश्रित चरों शैक्षिक तनाव, आक्रामक व्यवहार तथा सामाजिक संवेदनशीलता का परीक्षण करेंगे। पूर्व परीक्षण के पश्चात् हम क्रिया आधारित शांति शिक्षा कार्यक्रम द्वारा निर्मित पाठों का प्रयोगात्मक समूह पर अध्ययन करेंगे। प्रत्येक पाठ को 40 मिनट प्रदान की जायेगी। प्रयोग के अन्त में पुनः आश्रित चरों शैक्षिक तनाव, आक्रामक व्यवहार तथा सामाजिक संवेदनशीलता का परीक्षण किया जायेगा।

1.12.3 आंकलन या मूल्यांकन चरण– दोनों समूहों से प्राप्त प्रदत्तों का संकलन पूर्व परीक्षण तथा पश्च परीक्षण के द्वारा किया जायेगा। विद्यार्थियों में हुए व्यवहार परिवर्तन का आंकलन शोधार्थी द्वारा निर्धारित किये गये शोध उद्देश्यों के आधार पर किया जायेगा।

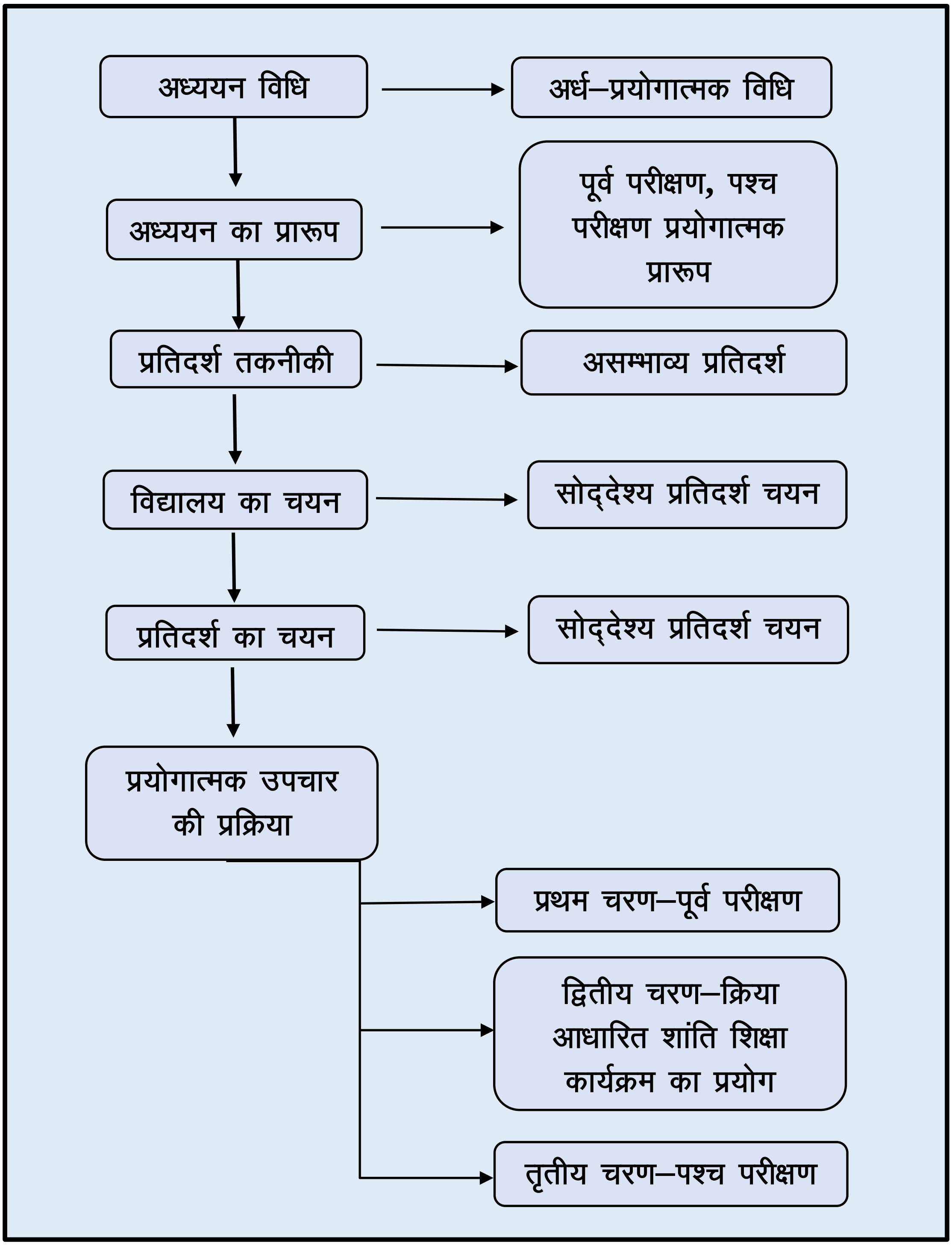

'. **चित्र 3.0: शोध अभिकल्प का प्रारूप**

1.13.0 अध्ययन में प्रयुक्त उपकरण–

शैक्षिक तनाव – रानीसीमा और सिंह बसंत बहादुर (2008) का **''स्ट्रेस इन्वेन्ट्री फॉर स्कूल स्टूडेन्टस''** का प्रयोग किया जायेगा। इस मनोवैज्ञानिक परीक्षण में 40 प्रश्न हैं। यह विद्यार्थियों के शैक्षिक तनाव का मापन करेगा।

आक्रामक व्यवहार – माथुर, जी०पी० और भट्नागर, राजकुमारी (2004) का **"एग्रेशन स्केल"** उपयोग में लिया जायेगा। इस मनोवैज्ञानिक परीक्षण में 55 प्रश्न हैं। यह विद्यार्थियों के आक्रामक व्यवहार का मापन करेगा।

सामाजिक संवेदनशीलता – स्वयं निर्मित परीक्षण का प्रयोग किया जायेगा। इस प्रश्नावली में सामाजिक संवेदनशीलता से सम्बन्धित प्रश्नों को रखा जायेगा तथा यह विद्यार्थियों की सामाजिक संवेदनशीलता का मापन करेगी।

1.14.0 सांख्यिकीय प्रविधियाँ – प्रस्तुत शोध कार्य के प्राप्त आंकड़ों को निम्न सांख्यिकीय प्रविधियों द्वारा विश्लेषित किया जायेगा–

- **वर्णनात्मक सांख्यिकी–** मध्यमान, मानक विचलन।
- **निष्कर्षात्मक सांख्यिकी–** टी परीक्षण।

1.15.0 अध्ययन की सार्थकता

उपर्युक्त शोध के परिणाम नीतिनिर्धारकों, अध्यापकों, विद्यार्थियों, पाठ्यक्रम निर्माण कर्ताओं और अभिवावकों को उनके क्रियाकलापों में सार्थक परिवर्तन करने में सक्षम होंगे। नीतिनिर्धारक तथा अध्यापक इस शोध के परिणाम स्वरूप शांति शिक्षा को शिक्षा का अभिन्न अंग बनाने की दिशा में कार्य कर सकते हैं। पाठ्यक्रम निर्माणकर्ता उपर्युक्त शोध के परिप्रेक्ष्य में विद्यालय पाठ्यक्रम में यथोचित् परिवर्तन कर सकते हैं। शिक्षक अपनी शिक्षण विधियों तथा अभिवावक विद्यार्थियों के उचित दिशानिर्देशन में उपयुक्त शोध के परिणामों का उपयोग कर सकते हैं। विद्यालय सम्बन्धित प्रशासनिक कार्य भी इस शोध के परिणामों से लाभान्वित हो सकते हैं। विद्यार्थी भी शोध के परिणामों से अपने व्यवहार, मूल्यों, नीतियों में यथोचित् परिवर्तन ला सकते हैं।

References

- Bender L., Walia G., Kambhampaty K., Nygard K.E., Nygard T.E. (2012). Social sensitivity correlations with the effectiveness of team process performance: an empirical study, Proceedings of the ninth annual international conference on International computing education research, Auckland, New Zealand
- Berkowltz, L. (1993). Aggression: Its Causes, Consequences, and Control. New York: McGraw-Hill.
- Bjorkqvist, K., Lagerspetz, K.M.J., and Osterman, K. (1992). The Direct and Indirect Aggression Scales. Abo Akademi University, Vasa, Finland.
- Chen, X., Huang, X., Wang, L., & Chung, L. (2012). Aggression, peer relationships and depression in Chinese children: A multiwave longitudinal study. *The Journal of Child Psychology and Psychiatry, 53* (8). doi:10.1111/j.1469-7610.2012.02 576.X
- Fry, P. S. (1976) Children's Social Sensitivity, Altruism, and Self-Gratification, *The Journal of Social Psychology*,98:1, 77-88, DOI: 10.1080/00224545.1976.9923368
- गुप्ता, एस. पी. (2008). उच्चतर समाज मनोविज्ञान. इलाहाबाद: शारदा पुस्तक भवन
- Harris, I. M. (1998). Peace Education, Jefferson, North Carolina: Me Farland & co.
- Jain, I. (2017). Elements of Peace Education in Jain Darshan and Their Relevance in School Curriculum, Unpublished Ph.D. Thesis, Mohanlal Sukhadiya University, Udaipur, Retrieved from: http://hdl.handle.net/10603/203280
- Johal, S. K., & Kaur, K. (2015). Adolescent aggression and parental behaviour: A correlational study. *ISOR Journal or Humanities and Social Sciences, 20*(7), 22-27
- Johs, S. (1979). Social Sensitivity as a Factor in the Teaching Process. *A Theoretical Discussion and an Experimental Contribution, Scandinavian Journal of Educational Research, 23:3,* 131-150, DOI: 10.1080/0031383790230304
- Joshi, C., & Rizwan, M. (2015). Impact of aggressive behavior on the academic achievement of adolescents. *International Journal of Arts, Humanities & Management Studies, 01*(11), 33-38.

- Journal of Peace Research (JPR): http://jpr.sagepub.com
- Kaul, L. (1999). Methodology of Educational Research. New Delhi: Vikas Publishing House Ltd.
- Kimberley, J. (2012). Think Social Psychology. Edition 01. Cerritos College, Canada: Pearson
- Klaschinski L., Schnabel K. & Schröder-Abé M. (2017) Benefits of power posing: effects on dominance and social sensitivity, *Comprehensive Results in Social Psychology*, 2:1, 55-67, DOI: 10.1080/23743603.2016.1248080
- Kothari, C. R. (2004). Research Methodology, Methods and Techniques. New Delhi: New Age International Publishers
- Kumar, R. (2011). A study into the effectiveness of peace education in controlling the violent and repulsive ways of students for higher academic achievements. Unpublished Ph.D. Thesis, Retrieved from: http://hdl.handle.net/10603/24025
- कुमुद, (2013), किशोर विद्यार्थियों के शैक्षिक तनाव का उनकी शैक्षिक निष्पत्ति पर प्रभाव का अध्ययन अनपब्लिश्ड एम0एड0 डिजरटेशन, शिक्षा संकाय, डी0ई0आई0 डीम्ड यूनिवर्सिटी, दयालबाग, आगरा।
- Learning the Way of Peace (2001), A Teacher's Guide to Peace Education, UNESCO, New Delhi.
- MacGeorge, E. L., Samter, W., & Gillihan, S. J. (2005). Academic Stress, Supportive Communication, and Health. *Communication Education*, v54 n4 p365-372.
- Mangal, S.K. (2005). Advanced Educational Psychology. New Delhi: Prentice Hall of India
- Manoharlal, (2013). A comparative study of academic stress and personality patterns of hostlers and non-hostlers at secondary level. Shri Jagdish Prasad Jhabarmal Tibrewala University, Vidyanagari, Jhunjhunu, Rajasthan – 333001, Unpublished Ph.D. Thesis, Retrieved from: http://hdl.handle.net/10603/24686

- Mathai, S. (2014). Effectiveness of yoga as an instructional strategy peace education for secondary school students, Unpublished Ph.D. Thesis, Retrieved from: http://hdl.handle.net/10603/21365
- Nathan, Y. (1997). Framework of peace education A third world perspective, Unpublished Ph.D. Thesis, Gujrat Vidyapeeth. Retrieved from: http://hdl.handle.net/10603/192096
- National Council of Educational Research and Training (2005), National Curriculum Framework, Position Paper, National Focus Group on Education for Peace.
- Ocal, A. & Altınok, A. Soc Indic Res (2016) 129: 61. https://doi.org/10.1007/s11205-015-1091-6
- Patel, M. (2011). Recognizing the role of libraries in peace education, Unpublished Ph.D. Thesis, Gujrat Vidyapeeth. Retrieved from: http://hdl.handle.net/10603/192149
- Peace Research Association Aslo (PRIO): http://www.prio.no
- Pinto, S. P. (2013). A Study on the Effect of Specially Designed Instructional Material in Developing Peace Awareness Among the Pupils of Standard VII in Uttara Kannada District, Unpublished Ph.D. Thesis, Retrieved from: http://hdl.handle.net/10603/198019
- Saadi, Z.E., Honarmand, M.M., Najarian, B., Ahadi, H., & Askari, P. (2012). Evaluation of the effect of emotional intelligence training on reducing aggression in second year high school female students. *Journal of American Science, 8*(5), 209-212.
- Sarwono, S.W. (2013). Pengantar Psikologi Umum. Jakarta: RajaGrafindo Persada
- Scott E W. (2008). Resilience and academic stress: the moderating impact of social support among social work students, Advances in social work, V. 9, No 2.
- Sharma, A. (2006). Effect of yogic practices on social stress academic stress self-esteem and emotional maturity of senior secondary school students. Unpublished Ph.D. Thesis, Retrieved from: http://hdl.handle.net/10603/83857

- Social Sensitivity. (n.d.). In *Alleydog.com's online glossary*. Retrieved from: https://www.alleydog.com/glossary/definition-cit.php?term=Social+Sensitivity
- Sukhia, S.P. et.al. (1991). Element of Educational Research, New Delhi : Allied Publishers Ltd
- तोमर, जया (2011), अधिगम में समर्थ एवं असमर्थ बालकों का सामाजिक एवं शैक्षिक तनाव का अध्ययन अनपब्लिश्ड एम0एड0 डिजरटेशन, शिक्षा संकाय, डी0ई0आई0 डीम्ड यूनिवर्सिटी, दयालबाग, आगरा।
- The International journal of Peace Studies: http://www.gmu.edu/programm/icar/ijps
- Tyrrel, J (1992). Sources of stress among psychology undergraduates, *Irish Journal of Psychology*, 13:184-192.